जय श्री राम

- **दोहा :**

शारद सुमरि मनहीं मन ,भज गौरी के लाल ।
गुरु कृपा सन्मुख करू, कष्ट हरहि तत्काल ॥
बालाजी पूजन जहाँ, वहाँ बलि हनुमान ।
मम कुटिया पर कर कृपा, देवा हाथीवान ॥

• चौपाई

जय जय आदित्य कृपाला ।
तुम्हरो तेज जगत में आला ॥
वीर बली हनुमत से चेला ।
मानत विश्व चढ़ावहि तेला॥

दवापर कर्ण जनहि तुम आनी।
ना उन सम कोऊ जगदानी ॥
गुरु महिमा पंडोखर जागी ।
जो जन आय होय बड़ भागी ॥

हाथीवान बीर बल धारी ।
परमहंस संगी हितकारी॥
बरहा नाम सुन्दरही ग्रामा ।
हाथीवान देव को धामा ॥

गजवाहन पर देवा राजै।
सुन्दर सुखदही सूरत साजै ॥
पूरब दिश मंदिर जहि सोई।
सुन्दर सुखद रम्य जहि होई॥

जो समाधि पश्चिम दिश होई।
परम हंस पागल की सोई ॥
पागल प्रेम जिनहि अति भारे ।
कटही बन्ध वे भये निवारे ॥

हर अमावस भरहि जहि मेला।
भाजहि भूत हंसहि सब चेला ॥
कलयुग में जै पुन्य प्रतापी ।
मारही अधम होहि जो पापी ॥

सकल सिद्ध सब कारज होई।
जो जन आन तपै सो कोई ॥
जाके घर में झुले न पलना ।
जो तुरतहि चाहो तुम ललना ॥

हर मावस पंडोखर आई ।
ताको तुरतहि सुत मिल जाई ॥
जो जन दर पै मन से आई ।
मिटेअमंगल गवै बधाई ॥

भूतनाथ भूतेश के संगी ।
काटहि फंद होही जो जंगी ॥
बाजहि गुरु को जब है डंडा ।
रोवत भूत पाहि बहु दंडा ॥

हाथीवान जब हाथ उठावै ।
उठा पटक तुरतहि मच जावै॥
बरहा जिनहि महिमा न्यारी ।
वहु भाँति पूजहि नर नारी ॥

सिन्ध घाट के शेर कहावै।
जन-जन पर है सुख बरसावै॥
कहाँ तक महिमा कहो बखानी ।
तुम सम नहीं कोऊ जगदानी ॥

तुम्हरो तेज सकल महि छाई।
कहाँ तक देव करहु बड़ाई ॥
बाजे चहुँ दिश प्रभु को डंका ।
तुम सम नहि कोऊ रणवंका ॥

कृपा दृष्टि जापर होई जावे।
सो अपार धन संपत्ति पावे ॥
भक्तन को प्रभु भोले भाले।
दुष्टन को वन जाते भाले ॥

सम दृष्टी देखहि सब काऊ ।
हिय में तनकहि भेद न भाऊ ॥
प्रात नमन कीनहि जो कोई ।
ताके सफल मनोरथ होई ॥

नहाँ-धोय रवि जलहि चढ़ावा ।
ताके तनह रोग न आवा ॥
जाके हिय में चैन न सोई ।
कुष्ट रोग जे जन के होई ॥

सो जन पाठ करहि मन लाई ।
प्रेम सहित जो माँनहु भाई ॥
रवि दिन ब्रत बालाजी कीजै ।
निज काया कंचन सी कीजै ॥

तुम्हरे चेला जगहि घनेरे ।
मानत तुमहि होई सब चेरे ॥
दुनियाँ देखही कृत्य तुम्हारे ।
पुलकि पुलकि मन मोद उछारे ॥

गौर वर्ण तन तेज विशाला ।
रथ आरूढ़ रहे परकाला ॥
तुम्हरो तेज प्रबल जगमाही ।
कोऊ न जगह जहाँ तुम नाही ॥

संकट में जो इनहि ध्यावै ।
सो जन सनमुख इनको पावै ॥
अति कुबुद्धि प्रभु होही दुखारी ।
ना जानहु पूजा अग्यारी ॥

देव दया दसहि पै कीजै ।
प्रेम भाव उर में भर दीजै ॥
परमाथर हित सद बुद्धि कीजै ।
हृदय आन आसन प्रभु लीजै ॥

• दोहा

भय हरणे दुखभजने, जन जन के सुख धाम ।
मेरी भव बढ़ा हरो, पूरन होवे काम ॥
बुद्धिहीन मोह जानिए, पंडोखर सरकार ।
मन मंदिरहि विराजिए, करहुँ सदा उपकार ॥

जय श्री राम,

जय पंडोखर सरकार